बेजोड़ है मकराना की शिल्पकला

इटली की शिल्पकार ने करीब से देखी कारीगरी

पत्रिका संवाददाता

मकराना, 14 फरवरी। प्रकृति की हर चीज में किसी न किसी तरह की विशेषता होती है। कलाकार की ओर से नियमित अभ्यास जारी रखने पर उसकी कला में और निखार आता है। मकराना के शिल्पकार मेहनत एवं लगन के धनी हैं तथा वर्षों से निरन्तर अपनी परम्परागत शैली में मार्बल पर शानदार नक्काशी करते हैं। मकराना की शिल्पकाल अपने आप में बेजोड़ है। यह बात शनिवार को संगमरमर नगरी मकराना को करीब से जानने आई इटली की शिल्पकार सिमोना बोची ने पत्रकारों से कही। सिमोना ने बताया कि गत दिनों बडौदा में आयोजित हुई मार्बल आर्ट कार्यशाला में मकराना के शिल्पकारों के साथ एक माह तक रहने का अवसर मिला। शिल्पकारों के साथ रहने एवं उनकी कला को नजदीक से देखने पर शिल्पकारों की कार्यशैली ने उन्हे इतना प्रभावित किया कि कुछ नया सीखने की ललक उन्हे मकराना खींच लाई। वे यहां कुछ दिन रूककर यहां के लोगों ये रूबरू होंगी तथा स्थानीय शिल्प कलाकारों से मिलने के अतिरिक्त यहां पर मार्बल कार्व शैली को करीब से देखेगी। सिमोना के अनुसार वे अब तक नार्वे, इटली एवं भारत में आयोजित 6 कार्यशालाओं में भाग ले चुकी है। उनके द्वारा बनाई गई कलाकृतियां विभिन्न देशों के म्यूजियमों में दर्शनार्थ रखी गई है।

कार्य प्रणाली से अवगत कराया

सिमोना शनिवार को शिल्पकार जहुरूल इस्लाम के कारखाने गई और वहां के शिल्पकारों के साथ कार्य करते हुए यहां की शिल्पकला से मुखातिब हुई। जहुरूल इस्लाम ने सिमोना की चाहत के अनुरूप उसे खनन क्षेत्र में मार्बल के तौर तरीकों से अवगत करवाया।

मकराना मार्बल मण्डी में हस्तकला के बारे में जानकारी लेती इटली की सिमोना।